राम नाथ यादव 'बेख़बर'
जन्मतिथि - 08.11.1978
जन्मस्थान- चापदानी (हुगली)
पिता का नाम-राधा किसुन यादव
माता का नाम-पन्ना देवी
मोबाइल - 7980630154

कोकिल रानी डाल पर,गाती मधुरिम गीत।
जगा रही है बाग़ में,हुलस-हुलस कर प्रीत।।
हुलस-हुलस कर प्रीत,धरा भी करती नभ से।
मन में घुला मिठास,कोकिला कुहकी जब से।।
कहे नाथ कविराय,करे मौसम मनमानी।
सजा रही है साज,चमन में कोकिल रानी।।
****

होली आई द्वार पर,खुशियाँ लेकर संग।
हुरियारे हैं नाचते,पीकर दिन भर भंग।।
पीकर दिन भर भंग,करे हैं सब मनमौजी।
करे ठिठोली खूब ,आज भैया औ भौजी।।
कहे नाथ कविराय,प्रियतमा मुझसे बोली।
आओ प्रियतम आज,तनिक हम खेलें होली।।
****

सूरज बाबा आजकल,धरकर भीषण रूप।
अम्बर से धरती तलक,भेज रहे हैं धूप।।
भेज रहे हैं धूप,धरा धू-धू कर जलती।
गर्म हवा भी साथ,लुकाठी लेकर चलती।।
कहे नाथ कविराय,पस्त है काशी-काबा।
जला रहे हैं खूब ,इन्हें भी सूरज बाबा।।
****

आया मौसम ग्रीष्म का,कड़ी हुई है धूप।
प्यासी हैं नदियाँ सभी,प्यासे हैं नलकूप।।
प्यासे हैं नलकूप,मनुज पानी को तरसे।
नहीं कहीं पर आज,तनिक भी बादल बरसे।।
कहे नाथ कविराय,दुबक कर बैठी छाया।
क्रोधित होकर आज,धरा पर सूरज आया।।
****

जंगल पल-पल कट रहे,उजड़ रहे परिवेश।
सुंदरता खोने लगे,दुनिया के कुछ देश।।
दुनिया के कुछ देश,खड़े हैं आफत ओढ़े।
अपने सिर पर आप,चलाते अपने लोढ़े।।
कहे नाथ कविराय,करो जंगल में मंगल।
ध्यान रहे अब और,नहीं कट पाए जंगल।।
****

सागर से तुम व्यर्थ में,लगा रहे हो आस।
गागर में पानी भरो,रोज बुझा लो प्यास।
रोज बुझा लो प्यास,गगरिया कभी न टूटे।
सागर जी का साथ,अगर छूटे तो छूटे।
कहे नाथ कविराय,चलो ले आओ गागर।
गागर में हम भरें,आज मिलजुल के सागर।।
****

सावन आया झूम के,बरसा रस की धार।
कलियाँ मन की खिल गयीं,उमड़ रहा है प्यार।।
उमड़ रहा है प्यार,धरा भी कजरी गाती।
मोती जैसी बूँद,सभी के जी को भाती।।
कहे नाथ कविराय,हुआ मौसम मनभावन।
धरती माँ की प्यास,बुझाने आया सावन।।
****

तोता बैठा डाल पर,कुतर चुका है आम।
भरकर अपना पेट वो, बोला सीताराम।।
बोला सीताराम,याद तब ही आते हैं।
जब भी दाने चार,पेट में पड़ जाते हैं।।
कहे नाथ कविराय,बनाकर अपना खोता।
बोला जय-जय राम,बाग़ का भोला तोता।।
****

माली सींचे बाग़ को,सेवत है हर फूल।
भले पाँव में रात-दिन,चुभ-चुभ जाते शूल।।
चुभ-चुभ जाते शूल,स्वप्न में माली खोया।
रंग-बिरंगा पुष्प,सदा ही माली बोया।।
झूम रहे हैं फूल,बजाते बच्चे ताली।
लहराए वन बाग़,जिये युग-युग तक माली।।
****

जीवन है गर इक नदी,सुख-दुख हैं दो पाट।
समझ सका यह भेद जो,पार उतरता घाट।।
पार उतरता घाट,वही अमृत घट पाता।
जीवन का हर गीत,मजे से हर दिन गाता।।
कहे नाथ कविराय,जगत है यह मनभावन।
जी भर जी लो आप,ख़ुशी से अपना जीवन।।
****